प्रयोगवादी नयी काव्य-धारा में अज्ञेय का स्थान

छायावाद ने हिन्दी कविता में जो कल्पना की रंगीनी एवं स्वानुभूतियों की सुकुमारता प्रदान की थी, प्रगतिवाद ने उसके स्थान पर कठोर यथार्थवाद को लाकर काव्य के क्षेत्र को शुष्क और थोड़ा नीरस कर दिया। उस समय अधिकांश हिन्दी कवियों ने यह अनुभव किया कि प्रगतिवाद कोई नूतन काव्य-धारा नहीं, बरन् एक राजनीतिक धारा है जिसका उद्देश्य साहित्य के माध्यम से मार्क्सवाद को प्रचारित करना मात्र है। अतः जिस प्रकार छायावाद का विरोध उसकी अन्तर्मुखी प्रवृत्ति की अतिशयता के कारण हुआ उसी प्रकार प्रगतिवाद का विरोध उसकी वहिर्मुखी प्रवृत्ति के आधिक्य के कारण होने लगा और साहित्य के प्रयोगशील चरण अपनी विकास यात्रा के लिए आगे बढ़ने लगे।

सन् १९४०-४१ के आस-पास भारतीय जन-जीवन विदेशी सत्ता द्वारा प्रताड़ित, प्रपीड़ित और प्रवंचित किया जा रहा था। सम्पूर्ण परिवेश में कुण्ठा, अभाव और संत्रास का धुंधलका छाया हुआ था। भारत का तत्कालीन मध्यवर्गीय बुद्धिजीवी वर्ग निरन्तर होने वाले भ्रष्टाचार, मँहगाई, दमन-गति-रोध, शोषण आदि को देखकर और सहकर विक्षुब्ध हो उठा। अविरत चल रहे आन्दोलनों की असफलता ने उसे एक नूतन क्रान्ति की ओर उन्मुख किया और इस कुहरिल वातावरण में रहकर उसकी ऊब, उमस, बेचैनी, असंतोष तथा रोष ने एक विस्तार ग्रहण किया। ऐसी स्थिति में, छायावादी मधुर और कोमल कल्पनाओं से रहित तथा प्रगतिवादी ठोस यथार्थ की शुष्कता से अलग हिन्दी साहित्य-क्षेत्र में एक नूतन काव्यधारा का श्रीगणेश हुआ। इस काव्य-धारा के प्रवाह में अधोलिखित विशेषताओं की लहरें उठ रही थीं। यथा—

honor 8X

१ प्रयोगशीलता के प्रति ललक
२ कविता की नूतन राहों के अन्वेषण की प्रवृत्ति
३ गलदश्रु, भावुकता और अवास्तविक एवं मात्र काल्पनिक वर्णनों का वहिष्कार
४ नूतन परिवर्तनों से प्रभावित सम्वेदना की अभिव्यक्ति
५ नूतन सौन्दर्य दृष्टि
६ व्यक्ति के सामाजीकरण की प्रवृत्ति
७ स्वतः स्फूर्त प्रतीक और सजीव बिम्बों का प्रयोग
८ छन्दों की निर्बन्धता का आग्रह
९ भाषा का नवीनीकरण और सपाटता

उक्त विशेषताओं से संकलित काव्य धारा को 'प्रयोगवाद' के नाम से अभिहित किया गया और 'तार सप्तक' के प्रकाशन की तिथि से अर्थात् १९४३ ई० से इसका शुभारम्भ माना गया। इस काव्य-धारा को प्रवर्तित और प्रसारित करने का श्रेय हीरानन्द सच्चिदानन्द वात्सायन 'अज्ञेय' को है। जो कार्य रीति काव्य-धारा के लिए केशवदास ने किया था अथवा द्विवेदी-युगीन काव्य-धारा के लिए आ० महावीर प्रसाद द्विवेदी ने मिलकर किया था, लगभग वैसा ही ऐतिहासिक कार्य प्रयोगवादी काव्य-धारा के लिए 'अज्ञेय' द्वारा सम्पन्न हुआ है। हिन्दी-कविता के क्षेत्र में सप्तकों का प्रकाशन कर अज्ञेय ने स्वयं को एक महत्वपूर्ण दायशील साहित्यकार की गरिमा से स्वतः मंड़ित कर लिया। उनके द्वारा सम्पादित तीनों सप्तकों और उनमें संकलित कवियों की सूची इस प्रकार है—

(क) 'तार सप्तक'--(सन् १९४३)-१. अज्ञेय २. गजानन माधव मुक्तिबोध ३. गिरिजाकुमार माथुर ४. प्रभाकर माचवे ५. नेमिचन्द्र जैन ६. भारत भूषण ७. रामविलास शर्मा।

(ख) 'दूसरा सप्तक' (सन् १९५१)—१. भवानी प्रसाद मिश्र २. शकुन्तला माथुर ३. हरिनारायण व्यास ४. शमशेर बहादुर सिंह ५. नरेश कुमार मेहता ६. रघुवीर सहाय ७. धर्मवीर भारती।

honor 8X

(ग) 'तीसरा सप्तक' (सन् १९५९)—१. प्रयागनारायण त्रिपाठी २. कीर्ति चौधरी ३. मदन वात्स्यायन ४. केदारनाथ सिंह ५. कुँवर नारायण ६. विजयदेव नारायण साही ७. सर्वेश्वर दयाल सक्सेना।

अज्ञेय के उक्त महत्वपूर्ण श्रम की प्रशंसा करते हुए डा० शिवकुमार मिश्र ने एक स्थान पर लिखा है कि—".....आज यह तथ्य भले ही सम्बन्धित कवियों में से कुछ के द्वारा सामने लाया गया हो, कि 'तार सप्तक' संकलन की मूलभूत योजना उन्हीं की थी और अज्ञेय अन्य कवियों के समान महज़ उसके एक कवि थे, परन्तु 'तार सप्तक' संकलन और उसके कवियों के प्रस्तुतकर्ता सम्पादक के रूप में, मतलब समूची योजना के सुत्रधार का आभास देते हुए, उन्हीं का उभर कर आगे आ जाना और एक लम्बी अवधि तक मुख्यतः उन्हीं के वक्तव्यों के आधार पर, तथा उनके द्वारा प्रस्तुत कविता को सामने रखकर 'प्रयोगवाद' नाम के एक नये आन्दोलन का जन्म, नामकरण और उन्हीं को उसका नेता मान लिया जाना आदि बातें अज्ञेय की उक्त विशिष्ट क्षमताओं का ही प्रमाण प्रस्तुत करती हैं।"

अतः इस नूतन काव्यधारा को प्रवाहित करने का श्रेय अज्ञेय को ही है, क्योंकि अज्ञेय ही अपने साथ नए बीस कवियों को सप्तकों के माध्यम से हिन्दी पाठकों के समक्ष लाये हैं। इस धारा की प्रवृत्ति और चिन्तन पद्धति का विश्लेषण भी अज्ञेय ने ही किया है। यद्यपि इस नई धारा के अन्य कवियों ने अपने-अपने स्वतन्त्र विचार व्यक्त किए हैं और वे परस्पर मेल भी नहीं खाते, क्योंकि अज्ञेय लिखते हैं—"वे सब किसी एक स्कूल के नहीं हैं, किसी एक मंजिल पर पहुँचे नहीं हैं, अभी राही हैं—राही नहीं, राहों के अन्वेषी। उनमें मतैक्य नहीं है, तभी महत्वपूर्ण विषयों पर उनकी राय अलग-अलग है—जीवन के विषय में, समाज और धर्म और राजनीति के विषय में, काव्य-वस्तु और शैली के, छन्द और तुक के, कवि के दायित्वों के प्रत्येक विषय में उनका आपस में मतभेद हैं। यहाँ तक कि हमारे जगत् के ऐसे सर्वमान्य और स्वयं सिद्ध मौलिक सत्यों को भी वे समान रूप से स्वीकार नहीं करते . . . ." तथापि इतनी असमानता के वावजूद "काव्य के प्रति एक अन्वेषी का दृष्टिकोण उन्हें समानता

के सूत्र में बाँधता है।"[1] इस प्रकार अज्ञेय ने ही प्रयोगवादी नई कविता और नये कवियों की पृष्ठभूमि तैयार की है उन्हें हिन्दी काव्य-क्षेत्र में पदार्पित होने के लिए प्रेरित किया है।

अज्ञेय को महत्वांकित करने के लिए आवश्यक है कि प्रयोगवादी कविता की सम्पूर्ण विशेषताओं का एकत्र-संचय कर उनके काव्य को समीक्षित किया जाये। अतः इस विवेचन को अपरिहार्य समझते हुए पहले हमें उनकी प्रयोगवादी रचनाओं का उल्लेख करना होगा। यह रचनाएँ हैं—

१ इत्यलम् (सन् १९४६) ('वंचना के दुर्ग' और 'मिट्टी की ईहा' मुख्यतः प्रयोगवादी)
२ हरी घास पर क्षण भर (सन् १९४९)
३ बावरा अहेरी (सन् १९५४)
४ इन्द्रधनु रौंदे हुए (सन् १९५७)
५ अरी ओ करूणा प्रभामय (सन् १९५९)
६ आँगन के पार द्वार (१९६१ ई०)
७ कितनी नावों में कितनी बार (सन् १९६७)

अज्ञेय के काव्य का वस्तु पक्ष

छायावादी कवि अज्ञेय के वैयक्तिक काव्य ने एक नया मोड़ लिया। उनकी कविता के वस्तुपक्ष में जीवन की सार्थकता-निरर्थकता, तुच्छता, कुरूपता एवं पंगुता, शून्यता एवं असारता और कभी-कभी आस्था एवं आत्मविश्वास के स्वरों को अभिव्यक्ति मिली है। इस प्रकार अज्ञेय के काव्य का वस्तुपक्ष अनेक तन्तुओं से बुना गया है। यथा—

मोह-भंग और यथार्थ के प्रति आग्रह

छायावादी कुहासे से निकलकर कवि अज्ञेय जीवन के वास्तविक धरातलों की खोज करने लगे। वास्तविकताओं और यथा तथ्यों की स्वीकृति के लिए यह आवश्यक हो जाता है कि जीवन में कुरूपता, तुच्छता, क्षुद्रता, वेदना आदि उतने ही सशक्त हैं जितने कि सुन्दरता, उदात्तता, भव्यता, आनन्द आदि सक्षम

---

१. 'तार सप्तक'—भूमिका, पृ० ५—६

honor 8X

हैं। अज्ञेय ने प्रकृति से बिम्बों और प्रतीकों को ग्रहण कर जीवन की इस यथार्थ-स्थिति को अनेक स्थलों पर उद्घाटित किया है। शिशिर की राका निशा के यथार्थ रूप को व्यक्त करते हुए कवि का कथन है—

वंचना है चाँदनी सित
झूठ वह आकाश का निरवधि गहन विस्तार
शिशिर की राका-निशा की शांति है निःसार। (इत्यलम्)

इसकी निस्सारता का कारण कवि की मोहभंग की स्थिति है। वह इस सित चाँदनी की भव्यता में कुछ और ही देखते हैं—

सिहरते-से, पंगु टुंडे
नग्न बच्चे, दईमारे पेड़।

और इन पेड़ों के अतिरिक्त—

"पास फिर, दो भग्न गुम्बद—
निबिड़ता को भेदती चीत्कार-सी मीनार—
बाँस की टूटी हुई टट्टी, लटकती
एक खम्भे से फटी-सी ओढ़नी की चिन्दियाँ दो चार
निकटतर धँसती हुई छत आड़ में निर्वेद
मूत्र-सिंचित मृत्तिका के वृत्त में
तीन टाँगों पर खड़ा नत ग्रीव
धैर्य-धन गदहा।'

इस प्रकार मूत्र-सिंचित वृत्त में तीन टाँगों पर खड़ा गदहा प्रयोगवादी कविता के नवीन बिम्बविधान के सूचक हैं जिसके मूल में मोहभंग की प्रवृत्ति है जो जीवन की तुच्छता, पंगुता कुरूपता का सामना करने के लिए कवि को बाधित करती है। इस प्रवृत्ति के उद्भव एवं प्रसार को न केवल अकाव्यात्मक घोषित किया गया है वरन् इसे विकृत मनोवृत्ति का परिणाम भी कहा गया है।[1] अज्ञेय 'महीवाल से' नामक कविता में भी यथार्थ के प्रति आग्रह को परिष्कृत रूप में व्यक्त करते हैं जिसमें व्यंग्य का पुट मोह-भंग की चेतना को [illegible]ता है—

---

१. समालोचक : यथार्थवाद विशेषांक, पृ० १३३

"क्रौंच बैठा हो कभी बाल्मीकि पर
तो मत समझ
यह अनुष्टुप् बाँचता है संगिनी के स्मरण के—
जान ले, दीमकों की टोह में है।"

व्यक्ति का सामाजीकरण

अज्ञेय का 'व्यक्तित्ववाद' व्यष्टि-केन्द्रित नहीं, समष्टि केन्द्रित है। उनके जो वैयक्तिक मूल्य हैं, वे भी समाज से ही गृहीत हैं। अतएव उनके व्यक्ति-चेतनगत मूल्यों को पूर्ण आत्मकेन्द्रित अथवा सम्पूर्ण व्यक्तित्ववादी नहीं माना जा सकता। अज्ञेय का 'व्यक्तिवाद' समष्टि-रूप में इस प्रकार अभिव्यक्त हुआ है--

"हम नदी के द्वीप हैं।
हम नहीं कहते कि हमको छोड़कर
स्रोतस्विनी बह जाय ?
वह हमें आकार देती है।
हमारे कोण, गलियां, अन्तरीप, उभार, सैकत, कूल
सब गोलाइयाँ उसकी गढ़ी हैं।
मां है वह ! इसी से हम बने हैं।"

'नदी के द्वीप' की भाँति 'यह दीप अकेला' आदि रचनाओं में भी व्यक्ति के सामाजीकरण पर विशेष बल दिया है। 'नया कवि : आत्योपदेश' में कवि स्वयं को उपदेश देते हुए कहते हैं—

"गैर को मत कोंच
तू पहचान अपनापन :
चुनौती है जहाँ
तू अविकल्प साहस कर :
यहाँ प्रतिरोध दुर्बल है, सुलभ जय' सोच
ऐसा, साहसिक मत बन।
अभियान में जिन खाइयों में
कूदना है, कूद :

भरा है उन अंधेरा इसलिए
मत नयन अपने मूँद !
दीठ की मत डींग भर
जो दिखा उसके बूझने की
तू तपस्या कर
स्वयं अपने-आप से तू झर
प्यास पर तू विजय पा, पर
और जो त्यासे मिलें, उनके लिए
चुपचाप निश्चल स्वच्छ शीतल
प्राण-रस से भर ।"

डा० इन्द्रनाथ मदान के शब्दों में, "प्रारम्भिक छायावादी रचनाओं में इनकी व्यक्तिमूलक जीवन दृष्टि का रूप भावात्मक एवं आदर्शवादी है; प्रयोगवादी रचनाओं में यह चेतना आत्मकेन्द्रित एवं आत्मलीन होकर बौद्धिक एवं यथार्थवादी धरातल पर व्यक्त हुई है और नयी कविता की रचनाओं में यह सामाजिक पक्ष की ओर उन्मुख है ।"[1]

जीवन के विघटित मूल्यों की अभिव्यक्ति

यन्त्र-सभ्यता के परिणाम स्वरूप जीवन-मूल्यों का जो विघटन हुआ है, उसकी अभिव्यक्ति अज्ञेय ने अनेक स्थलों पर की है । कुछ पंक्तियाँ देखिए—

छिछली उथली घनी चौंध से अन्ध
घूमते हैं हम
अपने रचे हुए
मायावी उजियाले में
गहरे में—कुछ इतना सूना जो
भिद कर भी लौटा ही देता है प्रकाश :
सतहों पर—टूटी चमकीली सतहों को बाँध-बाँध
लसझाने वाला

---

१. आधुनिक कविता का मूल्यांकन, पृ० ३७२

honor 8X

सतहों का ही जटिल पाश
सतहें—कच टुकड़े
यही जुटा पाये हम
भीतर किरण रही जो
वह नीलाम चढ़ गयी ।

इन पंक्तियों में जीवन की नगण्यता की अनुभूति है, जो यन्त्र-सभ्यता का परिणाम है । अन्तिम तीन पंक्तियों में पूँजीवादी संस्कृति पर व्यंग्य भी कसा गया है । किरण का नीलाम होना इस संस्कृति के कारण सम्भव हुआ है, कच के टुकड़ों को ही जुटा पाना आज के मानव की उपलब्धि है जिसके मूल में जीवन-मूल्यों का विघटन है ।

क्षण का महत्व

पाश्चात्य विचारकों द्वारा प्रतिपादित अस्तित्ववादी दर्शन के प्रभाव से नये कवियों ने क्षण की महत्ता पर विशेष बल दिया है । क्षण के महत्व-स्वीकार को अज्ञेय के इन शब्दों में देखिए—

हमें किसी कल्पित अजरता का मोह नहीं ।
आज के विविक्त अद्वितीय इस क्षण को
पूरा हम जी लें, पी लें, आत्मसात् कर लें—
उसकी विविक्त अद्वितीयता
आपको, कमपि को, क ख ग को
अपनी-सी पहचनवा सकें
रसमय करके दिखा सकें–
शाश्वत हमारे लिए वही है ।

अज्ञेय की दृष्टि में कोई सत्य अविकल रूप में अधिक नहीं जी सका है, वह चाहे बुद्ध, ईसा या गांधी का सत्य हो । उन्हें क्षण ही एक अमरत्व है । इस नाम की कविता में क्षण के महत्व को इन शब्दों में व्यक्त किया गया है—

नहीं बाँध कर रखा जाता
छोटा-सा पल छिन
चढ़ डोले पर चली जा रही
काल की दुल्हन ।

honor 8X

वेदना का आग्रह

अज्ञेय की कविता में वेदना का इतना महत्व है कि वह इसे एक जीवन-दर्शन के रूप में ग्रहण करते हैं। उनके अनुसार जीवन में जब एक बार दुःख की रेखा अंकित हो जाती है तो वह अमिट बनी रहती है–

एक रेखा जिसे
न बदला जा सकता है न मिटाया जा सकता है
न स्वीकार द्वारा ही डुबा दिया जा सकता है
क्योंकि वह दर्द की रेखा है
और दर्द
स्वीकार से भी मिटता नहीं है।'

इस दर्द का एक महत्वपूर्ण समर्थन देखिए—

(१) दर्द कुछ मैला नहीं,
कुछ असुन्दर, अनिष्ट नहीं,
दर्द की एक अपनी दीप्ति है
ग्लानि वह नहीं देता।

(२) दुःख सबको माँजता है।

लघु मानव की प्रतिष्ठा

टूटन, भटकन और घुटन को अनुभव करते हुए लघुमानव के अनेक चित्र अज्ञेय की कविता में बिखरे पड़े हैं। यथा—

(१) मेरा फीका-सा आलोक
डरते-डरते व्यक्त कर रहा तेरी मुख-छवि
पर हा ! कितना छोटा है मेरा आलोक (चिन्ता)

(२) छोटा-सा भी मैं हूँ स्वर-रवि का प्रतिनिधि काली तमसा में
रक्षक अथक खड़ा हूँ लेकर उसकी थाती मंजूषा में।

(इत्यलम्)

आस्था और अनास्था के स्वर

अज्ञेय की कविता में आस्था और अनास्था से भरे स्वर एक साथ देखे जा सकते हैं। अनास्था की अभिव्यक्ति देखिए–

क्यों करूँ आराधना उस देवता की
जो कि मुझको सिद्धि तो क्या दे सकेगा
जो कि मैं स्वयं हूँ।—'दीप थे अगणित'

(हरी घास पर क्षण भर)

आस्था भरे स्वर देखिए—

तुम भले मान लो मुझे अकिंचन
पर क्या मेरी आस्था भी नगण्य है ?
देकर देते-देते चुक जाने पर
वही प्रेरणा देती है ! मैं दे सकने को
और नया कुछ रचूँ ? फिर रचूँ ?—'आत्मा बोली'

(हरी घास पर क्षण भर)

उक्त विशेषताओं के अतिरिक्त अज्ञेय की वस्तु-पक्ष की अन्य विशेषताएँ भी हैं। इनमें से **सहज प्रेम की अभिव्यक्ति, अकिंचन परिस्थितियों तथा सामान्य वस्तुओं से बौद्धिक एवं रागात्मक सम्बन्ध, व्यंग्य का पुट, सामाजिक चेतना की अभिव्यंजना, लोक सम्पृक्ति की भावना, अहंवादी प्रवृत्ति, बौद्धिक चेतना, आधुनिकता एवं वैज्ञानिकता** आदि प्रमुख हैं।

अज्ञेय के काव्य का शिल्प-पक्ष

अज्ञेय के काव्य के शिल्प पक्ष में सर्वत्र प्रयोगशीलता एवं बौद्धिकता के तत्व विद्यमान हैं। संक्षेप में अज्ञेय के शिल्प की प्रमुख विशेषताएँ इस प्रकार हैं :

१. प्रतीक विधान

अज्ञेय प्रतीक को सत्यान्वेषण का साधन मानते हैं। उनके काव्य में विविध प्रकार के प्रतीक विद्यमान हैं—

अज्ञेय के प्रतीकों का स्वरूप इनकी काव्य-वस्तु के अनुरूप वैयक्तिक एवं बौद्धिक है। इनके प्रतीक विधान में जन-मानस अथवा लोक-चेतना का प्रभाव भी लक्षित होता है। काम-भावना तथा मनोविश्लेषण से प्रेरित होकर इन्होंने यौन प्रतीकों का भी प्रयोग किया है। क्षण की अनुभूति तथा मानसिक

honor 8X

स्थितियों को व्यक्त करने के लिए कवि ने नए प्रतीकों की उद्भावना की है। इस प्रकार अज्ञेय के नवीन प्रतीकों का कोष विशद् है।

२. भाषा

अज्ञेय की भाषा में छायावादी कोमलता तथा सुकुमारता का धीरे-धीरे लोप होता गया है और गद्यता तथा बौद्धिकता का विकास होता गया है। आलोचकों ने अज्ञेय की भाषा को कभी-कभी अनगढ़ ठीकरों के संयोजन की संज्ञा दी है। वे कभी-२ अपनी अभिजात्य संस्कृति के अनुरूप क्लिष्ट शब्दों का भी प्रयोग करते हैं साथ ही लोक-संस्कृति के प्रभाव-स्वरूप सुगम तथा व्यंजक शब्दों का प्रयोग भी उन्होंने किया है।

३. बिम्ब–विधान

अज्ञेय के काव्य में बिम्ब अकिंचन परिस्थितियों, सामान्य वस्तुओं, बौद्धिक स्तरों, मानसिक स्थितियों, ग्रामीण तथा नागरिक चेतना से प्रसूत हैं। इनकी जड़ें आधुनिक तथा यथार्थ की जड़ों में भिनी हुई हैं।

इस प्रकार अज्ञेय के काव्य के शिल्प-पक्ष के मूल में भी व्यक्ति-चिन्तन की दृष्टि है, वैयक्तिक अभिरुचि है, व्यक्तिनिष्ठ प्रतीक विधान एवं बिम्ब-विधान है, गद्य की लयात्मकता है, आन्तरिक स्वरपात है, भाव चित्रों का व्यक्तिगत प्रयोग है। एक आलोचक के अनुसार अज्ञेय का शिल्प अनगढ़ तथा अपरिष्कृत है। इसका खुरदुरा पन इसकी विशिष्टता है।[1] किन्तु डा० इन्द्र नाथ मदान के शब्दों में "अज्ञेय के काव्य का वस्तु पक्ष एवं शिल्प-पक्ष कमल के सौन्दर्य-बोध से कैक्टस की सौन्दर्य-चेतना की ओर विकसित हुआ है। इस विकास में इनके काव्य का इतिहास परिलक्षित होता है।"[2]

इस प्रकार काव्य विषयक मान्यताओं, चिन्तन और मनन काव्य का रूप देकर संपूर्णतया काव्य के धरातल पर प्रतिष्ठित करने का महत्वपूर्ण कार्य सम्भवतः हिन्दी में अज्ञेय ने किया है—इस सन्दर्भ में दूसरा नाम नहीं लिया जा सकता। वस्तुतः अज्ञेय की कविता में हर्ष, पुलक, सुख की सिहरन, आत्मिक उल्लास, प्रसन्नता, संकल्प, विशद् आशा, समर्पण का सुख, सौन्दर्य

---

१. हिन्दी नवलेखन, पृ० १९३
२. आधुनिक कविता का मूल्यांकन पृ० ३८८

honor 8X

की सुखद अनुभूति, विश्व कल्याण कामना, मीठी व्याकुलता, आध्यात्मिक प्रतीक्षा, जबरदस्त आत्मविश्वास की दीप्ति, तल्लीनता है। उनके चिन्तन में संगति है और व्यतित्व में भाव, चिन्तन, कल्पना तीनों का सन्तुलन है। उनकी कविता में रोमांटिक और अभिजातवादी दोनों विशेषताएँ विद्यमान हैं। रोमांटिक कवि के रूप में अज्ञेय में निम्नांकित विशेषताएँ हैं।

१. मूलभूत आनन्दवादी जीवन-दृष्टि
२. व्यक्तिनिष्ठ दृष्टिकोण
३. प्रकृति के सुन्दर एकान्त स्थलों में संवेदित होने की वृत्ति
४. व्यवहारिक शब्दों एवं जन भाषा के सामान्य शब्दों का प्रयोग करने की वृत्ति
५. प्राचीन कवियों द्वारा स्थापित अभिव्यक्ति सम्बन्धी बन्धनों का त्याग करने का साहस
६. एकान्त प्रेम

इसी प्रकार अभिजातवादी कवि के रूप में अज्ञेय जी को इन विशेषताओं से अभिमंडित किया है—

१. अभिव्यक्ति का संयम
२. शब्दों का समर्थ प्रयोग करने की छटपटाहट
३. कविता की अन्विति के प्रति सावधानी
४. काव्य संरचना के काव्यगत नियमों का अचूक पालन
५. कविता के मुख्य-अमुख्य आंतरिक घटकों के अनुपात का ध्यान
६. कृत्रिमता की ओर उदासीनता
७. औचित्य का विलक्षण निर्वाह।

किन्तु अज्ञेय की कविता रोमांटिक या गैर रोमांटिक इन पट्टियों में नहीं नापी जानी चाहिये क्योंकि अज्ञेय की दुनियाँ ही अलग दुनियाँ है। वह आत्म-परीक्षण की तथा मानव में आस्था, प्रेम विश्वास की सम्भावनाओं के प्रति दत्त चित्त दुनियाँ है।

honor 8X

डा० जगदीश गुप्त ने अज्ञेय के महत्व को स्वीकार करते हुए लिखा है कि "मैं अज्ञेय जी को 'आश्चर्य श्री' की तरह केवल 'प्रयोगवाद का पुरोहित' मात्र कहकर मुक्त नहीं हो सकता क्योंकि मैं अच्छी तरह जानता हूँ कि 'नयी कविता' और 'नये कवि' के स्वरूप, संगठन एवं शक्ति संचय में उनका अद्वितीय योग रहा है। .....वे स्वयं भले ही कहें कि नयी कविता ने द्विवेदी युग के गुप्त जी और छायावाद के 'निराला' की तरह कोई 'शलाका पुरुष' पैदा नहीं किया परन्तु मैं उन्हें निस्संकोच नयी कविता का 'शलाका पुरुष' कह सकता हूँ।"

वस्तुतः अज्ञेय प्रयोगवादी नयी कविता-धारा के पुरोहित एवं प्रवर्तक ही नहीं, अपितु, कवि, वकील और जज भी हैं।

———